B.A Part-3
Political Sociology (Paper-7)

Topic: - Social Mobilisation

प्र०- सामाजिक लामबंदी का अर्थ एवं उद्देश्य। [redacted]

उ०- लामबंदी का शाब्दिक अर्थ होता है 'लाम' अर्थात लोगों के समूह को एक विशेष गतिविधि के लिए संगठित करना। लामबंदी उन वंचित वर्गों का समूह या अन्य कोई कमजोर वर्गों के समूह को कहते हैं जो अपनी बुनियादी सुविधाएं या मौलिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए किसी गैर सरकारी संगठन के बैनर तले एकत्रित होते हैं। ऐसा लामबंद जिसका सकारात्मक प्रभाव प्रभाव समाज पर पड़े। यह एक सामाजिक निर्माण का कार्य है जिसके आंदोलन में सरकारी, गैरसरकारी संगठन या विभिन्न अभिकरण भाग ले। वैसे सामाजिक लामबंदी की शुरूआत समाज के वह वंचित वर्ग तथा वैसी महिलायें जो असंगठित नहीं हैं तथा अपनी मूलभूत एवं जरूरी आवश्यकताओं के लिए एक समूह में एकत्रित हो। इस प्रक्रिया में समाज की संरचना एवं कार्यप्रणाली का एक नया जन्म होता है। इसके अंतर्गत प्रस्थिति, वर्ग, स्तर तथा व्यवहार के अनेकानेक प्रतिमान बनते और बिगड़ते हैं। समाज हमेशा गतिशीलता की स्थिति में रहता है और उसमें परिवर्तन अवश्यम्भावी है।

इस प्रकार सामाजिक लामबंदी वह प्रक्रिया है जिसके किसी विशेष विकास कार्यक्रम के बारे में जागरूकता बढ़ाने तथा उसकी माँग करने के लिए विभिन्न क्षेत्रों में समुदाय के सदस्यों को एक साथ लाकर अथवा सशक्त बनाया जाता है।

Scanned by CamScanner

सामाजिक लामबंदी का उद्देश्य :→

(1) व्यक्तियों की सहभागिता →

सामाजिक लामबंदी व्यक्तियों, समूहों में वैसी क्षमता का निर्माण करती है या उनमें वैसी जागरूकता पैदा करती है ताकि वे अपनी आवश्यकताओं में सुधार के लिए सहभागिता एवं नियंत्रण के आधार पर सभी गतिविधियों का मूल्यांकन करें।

(2) महिलाओं में जागरूकता →

इसका दूसरा उद्देश्य है कि आधी आबादी का नेतृत्व करनेवाली महिलाओं की जागरूकता हर क्षेत्र में बढ़े जैसे- राजनीतिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, शैक्षणिक, व्यवसाय एवं नौकरी। इन सभी क्षेत्रों में इनकी सहभागिता बढ़ेगी, तभी वे आत्मनिर्भर बनेंगी। पंचायत-प्रणाली के माध्यम से जागरूकता बढ़ी है, आरक्षण के तहत स्वावलम्बी बनी हैं लेकिन अभी भी दूरदर्शिता का अभाव है। महिलाओं पर पुरुष वर्ग अभी भी हावी है। पुरुष समाज के हस्तक्षेप के कारण अभी भी वे आत्मनिर्भर नहीं बन पायी हैं तथा सामाजिक कार्यों में सहभागिता अभी नहीं है। जबतक इनका संगठन पूर्ण रूप समाज में लामबंद नहीं होगा, तो वे गुलामी की जिन्दगी ही जियेंगी।

(3) स्थानीय समस्याओं में सहभागिता :→

लोकतंत्र में स्थानीय निर्णय लेने में स्थानीय लोगों की सहभागिता की आवश्यकता होती है। क्योंकि उनकी जो समस्याएँ हैं, उसका निराकरण वही कर सकते हैं। इसी उद्देश्य से सत्ता का विकेन्द्री-

करण किया गया, साथ ही पंचायती राज प्रणाली लागू हुई। इस प्रकार में ऐसा कोई विकास का कार्य नहीं होता है तो लोग तुरंत लेकर लामबंद होते हैं। इस लामबंदी में समाज के सभी लोगों की सहभागिता होती है।

(4) राजनीतिक सहभागिता :—

लामबंदी का उद्देश्य राजनीतिक सहभागिता बढ़ाना। लोकतंत्रीय प्रणाली में राजनीतिक उद्देश्यों की प्राप्ति करने के लिए लोग गोलबंद होते हैं चाहे वह स्थानीय स्तर की राजनीति हो या राज्य स्तरीय या केन्द्र स्तरीय। राजनीतिक महत्व से दूर रहने वाले क्योंकि अपनी राजनीतिक सहभागिता बढ़ाने के लिए समाज के सभी वर्गों को लामबद्ध करते हैं। पहले राजनीतिक लामबंदी कम थी, लोग जागरूक नहीं थे। जब से पंचायती चुनाव शुरू हो गया तब से राजनीतिक सहभागिता बढ़ाने के लिए राजनीतिक दल की आड़ में लोग गोलबद्ध होने लगे।

(5) स्वास्थ्य, शिक्षा एवं संसाधन :—

लामबंदी का उद्देश्य यह भी है कि समाज में लोगों को स्वास्थ्य एवं शिक्षा की समुचित व्यवस्था हो। आज हम देखते हैं कि ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में खराब इलाज या रोगी की ठीक से देखभाल नहीं करने पर यदि रोगी की मृत्यु हो जाती है तो लोग व्यवस्था के खिलाफ लामबद्ध हो जाते हैं, व्यवस्था यानि अस्पताल प्रशासन के खिलाफ लामबद्ध होकर नारा लगाते हैं। अस्पताल में तोड़फोड़ की घटनायें भी देखने को मिलती हैं। वही स्थिति शिक्षा की भी है। आज समाज के सभी वर्ग शिक्षा के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। प्राइमरी

Scanned by CamScanner

शिक्षा में एम. डी. एम. की समुचित व्यवस्था नहीं रहने पर समाज के लोग सड़क पर उतर आते हैं तथा स्कूलों में तालाबंदी कर देते हैं। दूसरी तरफ सामाजिक लामबंदी का मुख्य उद्देश्य पंचायती राज्यों में संसाधन की व्यवस्था करना। स्थानीय स्तर पर प्रशासन को संसाधन की आवश्यकता होती है जिसका उचित स्थानीय प्रशासन करते हैं। संसाधन की कमी के कारण लोग लामबंद हो जाते हैं।

(6) सामाजिक एवं उत्पादक सेवाओं में सुधार —

सामाजिक सेवाओं में सामाजिक लामबंद अवसर देखने को मिलता है। ग्रामीण सेवाओं में जितनी भी उत्पादक वस्तुएँ हैं, वे ग्रामीण समाज से सीधे तौर पर जुड़ी रहती हैं जैसे - ग्रामीण समाज में जो भी अन्न का उत्पादन होता है उसकी क्रय - विक्रय को लेकर जनता सरकार का ध्यान आकृष्ट करती है। न्यूनतम मूल्य के निर्धारण के लिए वह धरना - प्रदर्शन आदि करती है। वह अपने प्रतिनिधि के माध्यम से सत्ता पक्ष तक अपनी आवाज को पहुँचाती है।

(7) पंचायती राज! —

लोक शिक्षा कार्यक्रम के माध्यम से लैंगिक भेदभाव ~~नीति~~ को प्रचारित करना ताकि महिलाओं तथा बच्चों के प्रति हो रहे अपराधों की कारवाई के लिए समुदाय को लामबंद करना। ग्राम सभा के साथ बैठक कर अन्य सामाजिक मुद्दों की चर्चा करना।

Scanned by CamScanner

स्थानीय विकास कार्यक्रमों एवं गतिविधियों के बारे में लोगों को जागरूक करना। समुदाय आधारित कार्यक्रमों में भाग लेने तथा सरकारी कार्यक्रमों का लाभ लेने के लिए समुदाय को लामबंद करना।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि व्यवहारिक राजनीतिक क्षेत्र में भारत में सामाजिक न्याय का नारा वंचित समूहों की राजनीतिक लामबंदी का एक प्रमुख आधार रहा है। आज सामाजिक लामबंद में नारी आंदोलन, नागरिक आंदोलन, पर्यावरण आंदोलन, ट्रांसजेन्डर आंदोलन आदि सक्रिय आंदोलन उभरे हैं, जो अपने मौलिक अधिकार के लिए लामबंद हो जाते हैं। द० अफ्रीका में अश्वेत लोगों ने रंगभेद के खिलाफ लामबंद हुए था। अतः सामाजिक लामबंद की प्रक्रिया प्रायः सभी देशों में पाई जाती है।